بسم الله الرحمن الرحيم

इस्लाम एक महान सच्चाई ।

- आप जगत में अपने निकट पाई जाने वाली रंगारंग वस्तुओं को देखें, अपने ऊपर फैले हुये अपार नीले गगन पर विचार करें, पृथवी आकाश की बनावट पर विचार करें, स्वयं अपनी आत्मा में उतर कर देखें, आप को एक अति आश्चर्यजनक दृश्य और एक विशाल संसार नज़र आयेगा जिस की समस्त वस्तुयें एक संगठित शैली में अपना कर्तव्य निभा रही हैं । प्रकट है कि यह सारी वस्तुयें स्वयं तो संसार में नहीं आईं, निःसंदेह इन का जन्म दाता कोई न कोई अवश्य होगा, और यह भी प्रकट है कि वह एक ही होगा, इस लिये कि यदि इस संसार के कई संचालक होते तो संसार उस संगठित शैली में आप के सामने न होता जिसे आप देख रहे हैं, यह इस बात की साक्षी है कि जन्म दाता एक है अतः बुद्धि को यही बात लगती है कि हम उसी जन्म दाता के सामने अपना शीस नवायें, उसी की उपासना और बन्दगी करें उस के साथ किसी को साझी न बनायें, उस की निकटता प्राप्त करने का प्रयास करें, उस की उन शिक्षाओं को ग्रहण करें जिस में बुद्धिमानी और भलाइयों की गंगा बहती है ।
- निःसंदेह मनुष्य एक बुद्धि जीवी है, वह अपने निकट पाई जाने वाली वस्तुओं के विषय में विचार करता है, अपनी आत्मा के बारे में सोचता है, फलस्वरूप स्वंय उस के ज़ेहन में यह प्रश्न उभरता है कि वह आख़िर आया कहाँ से, उस का जन्म क्यूं हुआ, उस का अन्त कहाँ होगा,

उसे कहाँ जाना है, जिस प्रकार किसी के संग स्वार मनुष्य के लिये जानना आव्शयक है कि उस का संगी उसे कहाँ लेजारहा है, यह तो सांसारिक यात्रा की बात है जब कि जीवन यात्रा बड़ा लम्बा और बहुत थका देने वाला है।

- वास्तव में इन सारे प्रश्नों का संतोषजनक उत्तर आप को इस्लाम के अतिरिक्त किसी अन्य धर्म में नहीं मिल सकता, इस्लाम ही वह पवित्र धर्म है जो मनुष्य को उस के जन्मदाता का सही परिचय देता है, अपने सृष्टा से अवगत कराता है, एवं उस तक पहुँचने का सत्य,स्पष्ट तथा सीधा मार्ग दर्शाता है,इस बात से भी अवगत कराता है कि उसे इस सांसारिक जीवन के बाद कहाँ जाना है, इस संसार के बाद आने वाले जीवन मे उस के उचित स्थान की भी सूचना देता है, इस प्रकार मनुष्य के लिये सुखमय जीवन व्यतीत करने की राह बनती है और उस को अपने सपने साकार होते नज़र आते हैं। यहाँ इस बात की भी पुष्टि होजाती है कि वास्तविक सौभाग्य और हक़ीक़ी सुख केवल इस्लाम की शीतल छाया ही में मिला सकता है, कहीं और नहीं।
- इस्लाम धर्म सदा के लिये सुरक्षित किया जाचुका है, नबी करीम ﷺ ने अपनी उम्मत को जो भी शिक्षा और संदेश दी है वह पहले की तरह शतप्रतिशत सुरक्षित है उस में बाल समान भी परिवर्तन नहीं हुआ और न ही परिवर्तन होना संभव है उस की हर बात बहुमूल्य और उस की हर शान निराली है। पवित्र कुर्आन जो इस्लाम की विशेष्ताओं का प्रतीक है, इस जैसी महान धार्मिक पुस्तक पूरे संसार

में नही मिलती । वास्तव में इस्लाम एक Complete code of life है जिस में जीवन की हर समस्या का समाधान मौजूद है, हलाल कमाई और लाभदायक ज्ञान प्राप्त करने की सर्वप्रथम शिक्षा इस्लाम ने ही दी है, इस्लाम मनुष्य को हर उस लाभदायक काम पर उभारता है जो उस के जीवन को बहुमूल्य बना दें इस्लाम प्रत्येक भलाई का आदेश देता है और हर बुराई से रोकता है इस्लाम अपनी धार्मिक समस्याओं में बड़ा सरल है । इस्लाम एक न्यायप्रिय धर्म है और न्याय ही की शिक्षा देता है इस्लाम परस्पर प्रेम से रहने पर अत्यन्त ज़ोर देता है ।

- इस्लाम से पूर्व मनुष्य ने पापों की जितनी भी खेतियाँ की हूँ, इस्लाम लाने और पापों से तौबा करने के बाद सारे पापों का परायिश्चत होजाता है, इस्लाम सारे पापों को धुल देता है फिर वह नवजात शिशु के समान पापों से पवित्र तथा मुक्त होजात है, रहीं इस्लाम से पूर्व की वह नेकियाँ जिसे अल्लाह की निकटता प्राप्त करने के लिये मनुष्य ने की थीं जैसे कि दान पुन्न आदि तो इस्लाम उन की सुरक्षा करता है और अल्लाह भी उसे स्वीकार कर लेता है । अपितु अल्लाह ने इस धर्म को एक विशेष सम्मान यह भी दिया है कि इस के मानने वालों को पहले की उम्मतों की तुलना कई गुना स्वाब देगा ।

इस्लामी शिक्षा का महत्व

- मनुष्य को अल्लाह तआला ने केवल अपनी उपासना के लिये जन्म दिया है, अल्लाह का फ़र्मान है :

- ﴿وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْإِنسَ إِلَّا لِيَعْبُدُونِي، مَا أُرِيدُ مِنْهُمْ مِنْ رِزْقٍ وَمَا أُرِيدُ أَنْ يُطْعِمُونِي، إِنَّ اللَّهَ هُوَ الرَّزَّاقُ ذُو الْقُوَّةِ الْمَتِينُ (**الذاريات** : ٥٦-٥٨)
- अर्थ : मैं ने जिन्नात एवं मनुष्यों को मात्र अपनी उपासना के लिये जन्म दिया है। मैं न उन से जीविका चाहता हूँ न ही मेरी इच्छा है कि वह मुझे खिलायें। निःसंदेह अल्लाह तो स्वयं जीविका प्रदान करने वाला महा शक्तिशाली एवं बलवान है। ﴾सूरये ज़ारियात : ५६-५८﴿
- अल्लाह की इच्छानुसार उपासना के लिये आवश्यक है कि आप अल्लाह के प्रिय धर्म इस्लाम के नियमों तथा आधारों का ज्ञान प्राप्त करें।
- आप ने इस्लाम क्यों ग्रहण किया ? इस प्रश्न का संतोषजनक उत्तर देने के लिये आवश्यक है कि आप अपने भीतर पूर्ण क्षमता पैदा करें।
- अन्य लोगों को इस्लाम की ओर आकर्षित करने के लिये भी आवश्यक है कि आप इस्लाम की शिक्षाओं को समझें और उन का गहराई से अध्ययन करें।
- आप को अल्लाह की ओर से एक महान सम्मान मिला है, इस सम्मान में उस समय चार चाँद लग सकते है जब आप इस धर्म का सत्य ज्ञान तथा सही समझ प्राप्त कर ले जायें अल्लाह के प्यारे नबी ﷺ का फ़र्मान है : अल्लाह जिस के साथ भलाई करना चाहता है उसे दीन की समझ प्रदान करता है। ﴾बुख़ारी व मुस्लिम﴿ अल्लाह के नबी ﷺ की ओर से आप के लिये यह शुभसूचना भी है कि : ﴾जो ज्ञान की खोज में यात्रा पर निकलता है, अल्लाह बदले में उस के लिये स्वर्ग का मार्ग सरल कर देता है﴿ ﴾तिर्मिज़ी﴿

मौखिक साक्षय

- अश्हदु अल्ला इलाह इल्लल्लाह व अश्हदु अन्न मुहम्मदन रसूलुल्लाह
- अर्थात : मैं इस बात का साक्षी हूँ कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य उपास्य नहीं, और मुहम्मद ﷺ अल्लाह के रसूल ﴾ईशदूत﴿ हैं ।
- यदि आप ने उपरोक्त वाक्य का अर्थ समझते हुये, उस की पूर्ण पुष्टि करते हुये, उन पर पूरा विश्वास रखते हुये अपने मुँह से उसे अदा किया है, तो आप मुसलमान बन चुके और इस्लाम की शीतल छाया में प्रवेश कर चुके हैं, यद्यपि आप के इस्लाम लाने का ज्ञान किसी को भी न हो
- ﴾लाइलाह इल्लल्लाह﴿ का अर्थ : मुझे दृढ़ विश्वास है कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य उपास्य नहीं, इस लिये कि वही प्रत्येक वस्तु का वास्तविक जन्म दाता है, न उस का कोई बाप है और न ही कोई बेटा, उस के अस्तित्व और उस की विशेष्ताओं में भी उस का कोई साझी नहीं न ही उस की महानता और उस के कमाल में कोई उस के समान है, अल्लाह के अतिरिक्त संसार की समस्त वस्तुयें किसी भी प्रकार के हानि लाभ की मालिक नहीं हैं न ही किसी को जन्म दे सकती हैं, उन्हें परोक्ष का ज्ञान भी नहीं अतः वह सजदे या पुकारे जाने के योग्य भी नहीं अपितु किसी भी प्रकार की उपासना उन के लिये वैध नहीं अल्लाह ही वह अकेला जन्म दाता है जिस की हर स्थिति में उपासना होनी चाहिये ।

﴾मोहम्मदुन रसूलुल्लाह﴿ का अर्थ :

- पुझे पूर्ण विश्वास है कि मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह अल्लाह की ओर से भेजे हुये ईश्दूत हैं जो लोगों के पास पवित्र ग्रन्थ कुर्आन और जीवन विधान लेकर आये हैं आप अन्तिम दूत भी हैं, आप को सच मानना,आपका अनुसरण करना तथा आप से प्रेम रखना अनिवार्य है, अल्लाह की उपासना उसी समय सही होसकती है जब हम आप ﷺ के तरीके पर करें ।

सलात, नमाज़

- नमाज़ एक दैनिक उपासना है जिस में मनुष्य अपने जन्म दाता तथा स्रष्टा के तईं विनय तथा प्रशंसा का प्रदर्शन करता है ताकि वह अल्लाह के निकट होजाये और अल्लाह उसे उत्तम अज्र दे और उस के पापों का प्रायश्चित करदे, इस प्रकार इस्लाम की राह में हमारे क़दम और दृढ़ होजायें ।
- प्रत्येक दिन पाँच नमाजें पढ़ी जाती हैं :
- सलाते फज्र ﴾फज्र की नमाज़﴿ सालते फज्र केवल दो रकअत है इस का समय रात्रि के अन्त और फज्र की प्रकाश फैलने से लेकर सूर्योदय तक रहता है ।
- सलाते ज़ोह्र ﴾ज़ोह्र की नमाज़﴿ इस की संख्या चार रक्अत है, समय सूरज ढलने से लेकर जब तक कि हर चीज़ की छाया उस के समान होजाये

- सलाते अस्र, ﴿अस्र की नमाज़﴾ इस की संख्या भी चार रकअत है, ज़ोहर का समय समाप्त होने से लेकर सूर्यास्त तक पढ़ी जाती है ।
- सलाते मग़्रिब ﴿मग़्रिब की नमाज़﴾ इस की संख्या तीन रक्अत है, समय सूर्यास्त से लेकर शफक़ की लाली लुप्त होने और पूरी तरह अंधकार फैल जाने तक रहता है ।
- सलाते इशा ﴿इशा की नमाज़﴾ इस की संख्या चार रकअत है, समय मग़्रिब की नमाज़ का समय समाप्त होने से लेकर मध्य रात्रि तक ।
- सलाते जुमा ﴿जुमा की नमाज़﴾ : जुमा के दिन एक मुसलमान के लिये आवश्यक है कि वह ज़ोहर के अस्थान पर मस्जिद में जमाअत के साथ जुमा की नमाज़ अदा करे, जुमा केवल दो रकअत पढ़ी जाती है, किन्तु यदि किसी की नमाज़ छूट जाती है तो वह ज़ोहर की नमाज़ अदा करेगा ।
- इन नमाजों के अतिरिक्त भी बहुत सी ऐसी नमाज़ें हैं जिन का स्वाब बहुत अधिक है, किन्तु आप उसे पढ़ने या न पढ़ने में स्वतंत्र हैं,उन की तरतीब कुछ इस प्रकार है : फज्र से पूर्व दो रकअत,ज़ोहर से पूर्व चार रकअत जिन्हें दो दो करके पढ़ा जाये गा,ज़ोहर के बाद दो रकअत, मग़्रिब के बाद दो रकअत,इशा के बाद दो रकअत, जुमा के बाद दो दो करके चार रकअत,इशा की नमाज़ के बा वित्र के नाम से एक अति महत्वपूर्ण नमाज़ पढ़ी जाती हे जिस की कम से कम संख्या एक रकअत है,इसी प्रकार जब कोई मस्जिद में प्रवेश करे तो रकअत पढ़े बिना न बैठे ।

पवित्रता, शुद्धता ﴾तहारत﴿

- जिस समय नमाज़ का विचार हो, आप का पवित्र होना आवश्यक है, ताकि आप जिस रब के लिये नमाज़ पढ़ने जारहे हैं उसे सम्मान दे सकें।
- पवित्रा वज़ू द्वारा भी प्राप्त होती है, वज़ू का नियम वही है जिस का वर्णन अल्लाह ने सूरये मायदह की आयत न.६ में किया है, आदेश है : हे ईमान वालो जब तुम नमाज़ पढ़ने का निश्चय करो : ﴾तो अपना चेहरा धुलो﴿ चेहरा धुलने में कुल्ली करना और नाक में पानी डाल कर नाक साफ करना भी दाख़िल है।
- ﴾फिर अपने दोनों हाथ कोहनियों तक धुलो﴿ यहाँ पर कोहनियों तक पूरे हाथ का धुलना वाजिब है, याथ धुलने का उत्तम नियम यह है कि पहले दाहिना फिर बायाँ हाथ धुला जाये।
- ﴾फिर अपने सिर का मसह करो﴿ यह आदेश कानों के साथ पूरे सिर का शामिल है।
- ﴾फिर अपने दोनों पैरों को टख़नों तक धुलो﴿ यह आदेश दोनों पैरों को टख़नों के अन्त तक धुलने को शामिल है, पैर धुलने का उत्तम नियम यह है कि पहले दाहिना फिर बायाँ पैर धुला जाये।
- ﴾इन चारों अंगों को धुलने में तरतीब आवश्यक है﴿
- नमाज़ के लिये पूरे शरीर को धुलना भी अनिवार्य है, निम्नलिखित परिस्थितियों में केवल वज़ू करना पर्याप्त नहीं होगा :
  - संभोग करने के बाद।
  - वीर्य का निकलना।
  - मासिक खून का बन्द होना ﴾महिलाओं के लिये﴿
  - प्रसव के बाद आने वाले खून का अन्त होना।

- पानी न मिलने अथवा बीमारी या किसी अन्य कारण पानी के प्रयोग की शक्ति न होने पर श्नान और वज़ू दोनों के स्थान पर तयम्मुम किया जायेगा। तयम्मुम का नियम यह है कि दोनों हाथों को एक बार पाक मिट्टी पर मारा जाये फिर उन्हें चेहरे और दोनों हथेलियों पर तरतीबवार मल लिया जाये पहले दाहिनी फिर बाईं हथेली पर।
- यदि आप पहले ही पवित्रता प्राप्त कर चुके हैं तो पुनः अन्य नमाज़ों के लिये आप को पवित्रता प्राप्त करने की आवश्यक्ता नहीं, यदि किसी कारण आप की पवित्रता भंग होजाये तो पुनः वज़ु करना अनिवार्य है।

वज़ू को भंग करने वाली वस्तुयें

- (1) पाख़ाना पेशाब की राह से किसी वस्तु का बाहर निकलना जैसे पेशाब पाख़ाना, हवा, वीर्य तथा खून आदि का निकलना। (2) पत्नी से संभोग करना। (3) बिना पर्दा गुप्तांग को छूना (4) नींद, नश्शह या पागलपन के कारण बुद्धि का समाप्त होजाना। (5) ऊंट का गोश्त खाना।

नमाज़ के नियम

- सर्वप्रथम नमाज़ का समय होने की पुष्टि कर लें जैसा कि नमाज़ का समय बताया जाचुका है।
- फिर इस बात की भी पुष्टि कर लें कि आप वज़ू से हैं तथा आप का शरीर, आप के कपड़े तथा नमाज़ का स्थान हर प्रकार की गन्दगी से पवित्र है।
- इस बात की भी पुष्टि होनी चाहिये कि नाभि से घुटने तक आप का शरीर ढका हुआ है, यदि शरीर के उपरोक्त भाग का

कोई हिस्सा खुला हो और इसी स्थिति में नमाज़ पढ़ ली जाये तो नमाज़ ही नहीं होती। इसी प्रकार मर्द का कन्धा भी ढका होना चाहिये। किन्तु नमाज़ में स्त्री के लिये मुंह और हथेली को छोड़ कर पूरे शरीर का ढकना अनिवार्य है। यदि ग़ैर मर्द हूँ तो इन का भी ढकना अनिवार्य है।

- जब नमाज़ का दृढ़ निश्चय होजाये तो आप मक्का में मौजूद क़िबला की ओर अपना मुंह करें, क़िबला उस पवित्र मस्जिद को कहते हैं जिसे अल्लाह नें मुसलमानो के लिये चुना है और जिसे अल्लाह के आदेश पर हज़रत इब्राहीम और हज़रत इस्माईल, दो महान नबियों ने निर्माण किया है।
- फिर आप खड़े होकर अल्लाहु अक्बर कहिये एवं अपने दोनों हाथों को कंधे या कान की लौ तक उठाइये, हाथों की हथेलियाँ खुली हुई हूं। फिर हाथ नीचे लाइये, दाहिने को बायें पर रख कर उन्हें सीने पर बांध लीजिये, पूरी नमाज़ में आप की निगाह सिजदे के स्थान पर हो।
- फिर सूरये फ़ातिहा पढ़िये जिसे निकट ही आप की सुविधा के लिये लिखा जायेगा, यदि फातिहा के साथ कुर्आन की कोई और सूरत भी पढ़ते हैं तो यह आप के लिये सौभाग्य की बात है।
- फिर आप अल्लाहु अक्बर कह कर रुकू करें,अल्लाहु अक्बर कहते समय दोनों हाथों को कंधे या कान की लौ तक उठायें, अब आप अपना पीठ सामने की ओर इस प्रकार झुकायें कि सिर और पीठ एक ही लेवल में रहे। फिर अपने हाथों को अपने घुटनों पर खूब जमा कर रखें और यह दुआ पढ़ें : (सुबहान रब्बियल अज़ीम) तीन या तीन से अधिक बार, फिर रुकू से सिर उठायें।
- (समिअल्लाहु लिमन हमिदह) कह कर सीधे खड़े होजायें दोनों हाथों को कंधे या कान की लौ तक उठायें, बेहतर यह है कि पहले के समान फिर आप दोनो हाथों को सीने पर रख लें।

- फिर आप अल्लाहु अक्बर कहते हुये सिजदा करें, सिजदे का नियम यह है कि आप अपने घुटनों को ज़मीन पर रखें एवं माथे और नाक को धर्ती पर, इसी प्रकार अपनी हथेली के आन्तरिक भाग तथा पैर की उंग्लियों को भी ज़मीन पर रखें और निम्न में दी जारही सिजदे की यह दुआ पढ़ें : (सुबहान रब्बियल आला)
- फिर अल्लाहु अक्बर कह कर बैठ जायें, और यह दुआ पढ़ें : (रब्बिग़ फिर ली वर हमनी वहदेनी वआफिनी वरज़ुक़नी)
- पहले के समान पुनः सजदा करें।
- इस प्रकार आप ने एक रकअत पूरी कर ली, अब पुनः अल्लाहु अक्बर कह कर दूसरी रकअत के लिये खड़े होजाइये, सूरये फतिहा की तिलावत कीजिये तथा वह सारे काम कीजिये जो आप ने प्रथम रकअत में किये हैं, फिर इस दूसरी रकअत के अन्तिम सिजदे से जब आप फारिग़ होजायें तो अल्लाहु अक्बर कह कर सीधे बैठ जायें।
- अल्लहु कह कर बैठने के बाद आप तशह्हुद पढ़ें निम्न में तशह्हुद की दुआ दी जारही है :
- अत्तहिय्यातु लिल्लाहि वस्सलवातु वत्तय्यिबातु,अस्सालमुअलैक अय्युहन्नबीय्यु वरहमतुल्लाहि व बरकातुहू, अस्लामु अलैना वअला इबादिल्लाहिस सालिहीन. अश्हदु अल्लाइलाह इल्लल्लाहु.व अश्हदु अन्न मुहम्मदन अब्दहू व रसूलहू,अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदिवं व अला आलि मुहम्मदिन,कमा सल्लैत अला इब्राहीम व अला आलि इब्राहीम इन्नक हमीदुम मजीद । व बारिक अला मुहम्मदिवं व अला आलि मुहम्मदिन,कमा बारकत अला इब्राहीम व अला आलि इब्राहीम इन्नक हमीदुम मजीद।

- अब आप सलाम फ़ेर दें, सलाम फ़ेरने का नियम यह है कि पहले आप दहिनी तरफ अपना चेहरा मोड़ें और कहें (अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह) फिर बायीं ओर मुंह मोड़ें और कहें (अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह) इस तरह आप की दो रकअत वाली नमाज़ समाप्त होगई जैसे कि फज्र की नमाज़ ।
- यदि नमाज़ दो रकअत से अधिक हो तो तशह्हुद के बाद सलाम न फेरें अपितु अल्लाहु अक्बर कह कर पुनः खड़े होजायें, फिर सूरये फातिहा पढ़ें, रुकू करें एवं उसी तरह सारे काम करें जैसा कि आप ने प्रथम रकअत में किया था, यदि नमाज़ मग़्रिब की होतो इसी एक रकअत पर बस करें और तशह्हुद में बैठ कर पहले के समान सलाम फेर दें । किन्तु यदि ज़ोहर, अस्र या इशा की नमाज़ हो तो आप तीसरी रकअत पढ़ेंगे फिर तीसरी के समान चौथी भी पढ़ेंगे फिर तशह्हुद में बैठ कर सलाम फेर देंगे ।
- आदमी प्रयास करे कि वह मस्जिद में जमाअत के साथ नमाज़ पढ़े ताकि उसे अधिक स्वाब मिले, इमाम के पीछे नमाज़ पढ़ने वाले के लिये आवश्यक है कि वह अपने इमाम का हर प्रकार अनुसरण करे न उस से आगे हो न ही उस के समान, अपितु तुरंत उस का अनुसरण करे ।
- यदि आप को सूरये फातिहा याद नहीं है तो कुर्आन का जो अंश भी आप को याद हो, चाहे एक ही आयत क्यों न हो आप उसे पढ़ लें, यदि आप को कुछ भी नहीं याद है या आप को तशह्हुद का पता नहीं या नमाज़ की अन्य दुआयें याद नहीं हैं तो आप केवल (सुबहानल्लाह)

(अलहमदुलिल्लाह)(लाइलाह इल्लल्लाह)(अल्लाहु अक्बर) (लाहौल वला कुव्वत इल्ला बिल्लाह) ही पढ़ने पर बस करें, आप को नमाज़ किसी भी स्थिति में नहीं त्यागना है यद्यपि आप को कुछ भी न आता हो। किन्तु भविष्य में आप के लिये आवश्यक है कि आप की नमाज़ की दुआयें सीख लें।

नमाज़ को नष्ट कर देने वाली वस्तुयें

- जान बूझ कर पूरे शरीर के साथ क़िबला की दिशा से हट जाना।
- जान बूझ कर नाजायज़ बातचीत करना, रही बात भूलने की या किसी को ज्ञान ही नहीं है कि बात करने से नमाज़ खराब होजाती है तो इस स्थिति में बात करने से नमाज़ पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा।
- नमाज़ में आवाज़ से हंसना।
- व्यर्थ हरकतें करना।
- नमाज़ की स्थिति में खाना पीना।
- वज़ू भंग होजाना।
- जान बूझ कर गुप्तांग से कपड़ा हटा देना, यहाँ गुप्तांग का अर्थ शरीर का वह भाग है जिस का ढकना नमाज़ में आवश्यक है।

No.	Arabic	Hindi
1	غسل الكفين	दोनों हथेलियों का धुलना
2	المضمضة	कुल्ली करना
3	الاستنشاق والاستنثار	नाक में पानी डाल कर नाक साफ करना
4	غسل الوجه	चेहरा धुलना
5	غسل اليد اليمنى	डाहिना दाथ धुलना
6	غسل اليد اليسرى	बायाँ हाथ धुलना
7	مسح الرأس	सिर का मसह करना
8	مسح الأذنين	कानों का मसह
9	غسل الرجل اليمنى	दाहिना पैर धुलना
10	غسل الرجل اليسرى	बायाँ पैर धुलना

वज़ू के बाद की दुआ :

أشهد أن لا إله إلا الله وحده لا شريك له، وأشهد أن محمداً عبده ورسوله.

मैं इस बात का साक्षी हूँ कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य उपास्य नहीं, और मुहम्मद ﷺ अल्लाह के बन्दे और रसूल ﴾ईशदूत﴿ है।

No.	Arabic	Hindi
1	تكبير الإحرام	तकबीरे तहरीमा
2	القيام للقراءة	केरात के लिये खड़ा होना
3	الركوع	रुकू करना
4	الرفع من الركوع	रुकू से सिर उठा कर सीधा खड़ा होना
5	السجود	सजदा करना
6	الجلوس بين السجدتين	दोनों सजदों के बीच बैठना
7	السجود	पुनः सजदा करना
8	القيام للقراءة	पुनः केरात के लिये खड़ा होना
9	الركوع	पुनः रुकू करना
10	الرفع من الركوع	रुकू से सिर उठा कर सीधा खड़ा होना
13	السجود	सजदह करना
14	التشهد	

			तशह्हुद में बैठना		
السجود	11	التسليم يميناً	15		
	सजदह करना		दाहिनी ओर सलाम फेरना		
الجلوس بين السجدتين	12	التسليم يساراً	16		
	दोनों सजदों के बीच बैठना		बाईं ओर सलाम फेरना		

इस्लाम के मूल आधार

- इस्लाम के महान तथा महत्वपूर्ण कार्यों की संख्या पाँच है जिन्हें इस्लाम के मूल आधार कहा जाता है।
- अल्लाह के एक और सत्य उपास्य होने की गवाही देना तथा मोहम्मद ﷺ के नबी और रसूल होने की गवाही देना। सत्य में यह दोनों गवाहियाँ इस्लाम का प्रवेश द्वार हैं।
- सलात अर्थात नमाज़ : यह वही दैनिक पाँच नमाज़ें हैं जिनका वर्णन होचुका है।
- ज़कात अर्थात दान : यह उस छोटी सी सीमित सम्पत्ति का नाम है जिसे एक मुसलमान अल्लाह की नेमतों का शुक्र अदा करने तथा नेकी के कार्यों में भाग लेने के लिये अदा करता है, इस्लाम में

विस्तार के साथ बताया गया है कि ज़कात कब कितना और किन लोगों के हक़ में वाजिब है।

- सौम (रोज़ा) : रमज़ान के महीने में सुबह से शाम तक खाने पीने तथा संभोग से रुक जाने का नाम सौम (रोज़ा) है, रमज़ा चाँद का नवाँ महीना है। यह वही पवित्र महीना है जिस में हमारे नबी मुहम्मद ﷺ पर कुर्आन करीम जैसी महान धार्मिक ग्रन्थ नाज़िल हुई। इस महीने एक मुसलमान अल्लाह के सामने पूर्ण आत्म समर्पण का पर्दशन करता है, अल्लाह की नेमतों तथा उपकारों का आभास कर अल्लाह का शुक्र अदा करता है, निर्धनों एवं ग़रीबों की आवश्यक्ताओं का आभास करके उन की सहायता करता है।
- हज्ज : मक्का जाकर कुछ विशेष उपासनाओं एवं सीमित कार्यों की प्रस्तुति का नाम हज्ज है, जिसे एक मुसलमान अल्लाह के आदेशों के पालन तथा सम्मान स्वरूप एवं उस की निकटता प्राप्त करने के लिये प्रस्तुत करता है। चंद्रमा वर्ष के अन्त में एक निर्धारित समय में इस उपासना को परस्तुत किया जाता है। हज जीवन में एक बार प्रत्येक शक्ति रखने वाले मुसलमान पर फर्ज़ है। इस प्रकार एक मुसलमान संसार के कोने कोने से एकत्रित हुये मुसलमानों का विशाल सम्मेलन देखता है जिस से उस के ईमान में बढ़ोत्री, शक्ति और ताज़गी आती है।

ईमान के मूल आधार

- इस्लाम में सर्वमहान आस्था जिस पर पूर्ण विश्वास रखना हर मुसलमान के लिये वाजिब है उन की संख्या ६ है ।
- अल्लाह पर ईमान : यह विश्वास रखना कि अल्लाह आकाश पर विराजमान है, वही हमारा रब और हर वस्तु का जन्मदाता है,वही हर वस्तु का वास्तविक स्वामी है, हर चीज़ से बेनियाज़ और हर वस्तु का ज्ञान रखने वाला है, हर चीज़ पर उसी का कबज़ा है, वह महान तथा पूर्ण शक्ति वाला है, वह अपने नाम, अपनी गुणों तथा विशेष्ताओं एवं कार्यों में अकेला तथा अछूता है । उस की न पत्नी है न संतान, न ही कोई उस का पिता, संसार की कोई वस्तु उस के समान नहीं, वह अकेला हमारा रब है,उसे छोड़ सब उस के दास हैं ।
- फरिश्तों पर ईमान : यह अल्लाह की महान स्रष्टि का प्रतीक हैं, यह अल्लाह के सदाचारी दास हैं, अल्लाह के निकट सम्मान वाले हैं, उन की संख्या बहुत अधिक है जिस का ज्ञान केवल अल्लाह ही को है, वह अल्लाह के आदेश पर इस संसार का बहुत सा कार्य करते हैं, नबियों के पास वह्य ﴿आकाशीय संदेश﴾ लाना भी उन्ही का काम है, वह इंसानों के सारे कार्यों का रिकारड भी तैय्यार करते हैं ।
- आस्मानी किताबों पर ईमान : इस बात का विश्वास रखना कि अल्लाह ने कुछ नबियों पर पवित्र किताबें नाज़िल फ़रमाई हैं ताकि उसे लोगों तक पहुंचायें, जो वास्तव में ईश्वाणी हैं, जैसे कि तौरात जो हज़रत मूसा ﷺ पर नाज़िल हुई, इंजील जो हज़रत ईसा ﷺ पर नाज़िल हुई, इन सब में अन्तिम किताब कुर्आन करीम है जिसे जिबरील ﷺ हमारे नबी मुहम्मद ﷺ के पास लेकर आये, और इस प्रकार यह अन्तिम किताब पूर्व की सम्सत किताबों की निरसक बनी, हमारे लिये समस्त आस्मानी

किताबों पर ईमान वाजिब है किन्तु अमल केवल कुर्आन के आदेशानुसार ही स्वीकार होगा।

- अल्लाह के रसूलों पर ईमान : अल्लाह ने मानवजाति में से कुछ लोगों को अपनी वह्य ﴿उपदेश﴾ के लिये चुना है, उन्हें लोगों के पास इस कारण भेजा है कि वह अल्लाह ही उपासना करें, जैसे कि हज़रत नूह, इब्राहीम, मूसा, ईसा अलैहिमुस्सलाम, हम इन सब पर ईमान रखते हैं किन्तु विधान केवल अन्तिम दूत मुहम्मद ﷺ ही का मानते हैं एवं उसी के आदेशानुसार कार्य भी करते हैं, आप को यूँ मक्का में भेजा गया किन्तु आप का निमंत्रण संसार के सभी लोगों के लिये है, आप को ईसा عليه السلام के लगभग छ सौ वर्ष बाद नबूव्वत के पद से सम्मानित किया गया।
- अन्तिम दिन पर ईमान : यह विश्वास भी हमारे ईमान का भाग कि अल्लाह मृत्योपरांत लोगों पुनः जीवित करेगा फिर उन का हिसाब लेगा और उन के कार्यों का बदला देगा, जो मोमिन और अल्लाह का फ़रमाबरदार होगा अल्लाह उसे जन्नत में प्रवेश करेगा, तथा जो नास्तिक एवं अल्लाह की नाफरमान होगा अल्लाह उसे नर्क में दाख़िल करेगा, यह सदैव का जीवन होगा, इस जीवन के बाद पुनः मृत्यु न न होगी। ﴿हे हमारे रब सांसारिक जीवन में भी हमें भलाई प्रदान कर तथा अन्तिम दिवस में भी हमें भलाई प्रदान कर एवं नर्क के प्रकोप से हमें बचा﴾
- भाग्य पर ईमान : इस बात पर विश्वास रखना कि अल्लाह ही ने भाग्य बनाई है, जन्म देने से पूर्व ही हर वस्तु की सीमायें निर्धारित की हैं, संसार में जो भी होता है वह अल्लाह के ज्ञान और उस की अनुमति ही से होता है यहाँ तक ईमान और कुफ्र, विपता और जीविका, जीवन एवं मृत्यु सभी अल्लाह के ईसी विधान के अधीन हैं, इस के पीछे अल्लाह की महान

हिकमत है जिस का ज्ञान केवल अल्लाह ही को है। अल्लाह ने यह सारी घटनायें और सारी बातें पूर्वतः अपने पास एक किताब में लिख छोड़ी हैं, अल्लाह के लिखित के विपरीत संसार में कुछ भी नहीं होता। अल्लाह अपनी महान शक्ति से बन्दों के लिये आसानियाँ पैदा फ़र्माता है और उस के भाग में जो लिखा है उसे करने की शक्ति प्रदान करता है।

तौहीद

- इस्लाम के घर की महत्वपूर्ण सम्पत्ति तौहीद है, तथा सब से भ्रष्ट वस्तु अल्लाह के साथ किसी को साझी बनाना है। एक मुसलमान की यह आस्था है कि अल्लाह ही वास्तविक पालनहार है, जन्म देना, आहार , बादशाहत, परोक्ष ज्ञान, जीवन मृत्यु तथा संसार का समस्त कार्य उसी के अधीन है उस का कोई साझी नहीं, इसी प्रकार मनुष्य यह भी आस्था रख्खे कि अल्लाह की महानता में उस का कोई साझी नहीं, न उस की कोई संतान है न ही पिता, उस के अस्तित्व, उस के नामों, उस की गुणों तथा विशेष्ताओं एवं कार्यों में उस का कोई उस के समान नहीं।
- मुसलमान के लिये यह आस्था रखना भी आवश्यक है कि अल्लाह ही वास्तविक उपासना तथा अराधना के योग्य है, अतः सजदह, कुर्बानी एवं अन्य उपासनायें केवल उसी के लिये होनी चाहियें। अल्लाह ही से हर हाल में सहायता मांगी जाये उसी को सहायता के लिये पुकारा जाये, उस के अतिरिक्त कोई भी पुकारे जाने के योग्य नहीं यद्यपि वह कितने ही महान पद पर विराजमान हो। यह विश्वास भी होना चाहिये कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई और हानि और लाभ का अधिकार नहीं रखता, चाहे वह नबी हो, वली, जादूगर, काहिन या कोई और, इसी

प्रकार मनुष्य के भाग्य पर अपशकुन, तावीज़ गण्डे, नक्षत्र आदि का भी कोई प्रभाव नही पड़ता ।

❋ वह लोगों के दिखावे के लिये भी अल्लाह की उपासना न करे । न ही वह ईशविधान की तुलना किसी मानव विधान को महत्व दे । न ही यह आस्था रखे कि मानव विधान ईशविधान से उत्तम है या उस के समान है । न ही अल्लाह के अतिरिक्त किसी और अपनी दासता की निस्बत करके अपना नाम रखे जैसे कहे, अब्दुन्नबी (नबी का दास), अब्दुल हुसैन (हुसैन का दास)

इत्तेबा (अनुसरण)

❋ अल्लाह का संदेशपालक बनने केवल यही काफी नहीं कि बिना ज्ञान उस की उपासना की जाये अपितु आवश्यक है कि उस के आदेशों का ज्ञान भी हो । किसी मुसलमान के लिये वैध नहीं कि वह दीन में किसी नवीन तथा नये काम का अविष्कार करे जिस का कोई प्रमाण अल्लाह की किताब या नबी ﷺ की सुन्नत से नहीं मिलता । बलकि उस के लिये अनिवार्य है कि अल्लाह के नबी ﷺ की उपासना के नियम सीख कर अल्लाह के नबी ﷺ का अनुसरण पूरे आत्म समर्पण तथा पूर्ण प्रसन्नत से करे । इस लिये कि नबी ﷺ की उपासना का नियम ही खरा तथा सर्वोच्च है, अब नबी ﷺ की उपासन नियम के विरुद्ध जो भी उपासना की जाये गी उस का अर्थ यह होगा कि इस्लाम में कोई कमी थी जो अब पूरी हुई है अथवा नबी ﷺ ने दीन पहुंचाने में असावधानी बर्ती है एवं अपने परम कर्तव्य को पूरा नहीं किया है ।

अवैध वस्तुयें

❋ अल्लाह हिकमत वाला है, मनुष्य को अल्लाह ने केवल उन्ही वस्तुओं से रोका है जो उस के लिये हानिकारक हैं।

❋ मनुष्य के इस्लाम की शक्ति और अल्लाह से उस के प्रेम का पता उस समय चलता है जब वह अल्लाह की निषेध की हुई वस्तुओं से प्रसन्नतापूर्वक अपने आप को अलग कर लेता है यद्यपि ह्रिदय उस कार्य का इच्छुक हो। वह अल्लाह के आदेश को अपनी आकांक्षाओं की तुलना अधिक महत्व देता है।

❋ इस्लाम में महा पाप :

- अल्लाह के साथ किसी को शरीक और साझी बनाना।
- इस्लाम के किसी विधान का उपहास उड़ाना, या उसे अप्रिय जानना।
- भाग्य से अप्रसन्नता या समय को गाली देना।
- किसी अवैध को वैध एवं किसी वैध को अवैध बनाना, तथा बिना ज्ञान धर्म संबन्धी बातें करना।
- दीन में बिदअत《नवीन कार्य》का अविष्कार करना,जैसे अल्लाह के नबी ﷺ का जन्म दिन मनाना,इसीप्रकार शीओं का हज़रत अली ؓ का जन्म दिन मनाना, नमाज़ में अवाज़ से नीय्यत करना आदि।
- नबी करीम ﷺ के सहाबा में किसी को गाली देना।
- जादू तथा ज्योतिष ज्ञान।
- समय से नमाज़ न पढ़ना, तथा आदमी का जमाअत के साथ मस्जिद में नमाज़ अदा न करना।
- ज़कात न देना। 《ज़कात》 समपत्ति का एक सीमित भाग जिसे अल्लाह के मार्ग में खर्च किया जाता है।
- बिना किसी वैध कारण रमज़ान के रोज़े त्याग देना।

- आत्महत्या, अथवा निर्दोष की हत्या ।
- संग्राम के मध्य युद्धस्थल से भागना ।
- व्यभिचार, होमोसेक्स, अथवा हस्थमैथुन करना ।
- कसी निर्दोष को बलातकार का दोषी ठेहराना ।
- यतीम का माल खाना या उस पर अत्याचार करना ।
- व्याज लेना देना, जैसे किसी को १०० रूपये इस शर्त पर दिये कि वापसी पर ११० रूपये लेगा
- रिशवत लेना देना ।
- जुवा खेलना ।
- चोरी करना,अमानत और उधार माल की सुरक्षा न करना, समय पर क़र्ज़ की अदायगी न करना,इस के अतिरिक्त अवैध समपत्ति बनाने के सारे रूप ।
- समपत्ति का दुरुपयोग ।
- माता पिता की अवज्ञापालन ।
- परिवार जनों तथा संबन्धियों को हानि पहुंचाना ।
- पड़ोसी पर अत्याचार करना ।
- सार्वजनिक स्थानों तथा साधारण वस्तुओं को नष्ट करना ।
- नियाय संबन्धी समस्याओं में अन्य लोगों पर अत्याचार करना अथवा अत्याचार पर किसी की सहायता करना ।
- पशुओं पर अत्याचार करना उन्हें बिना कारण यात्नायें देना ।
- झूटी गवाही देना, या गवाही छुपा जाना ।
- झूट बोलना, वचनभंग करना, झूट गढ़ना ।
- तकब्बुर करना या उपहास उड़ाना ।
- ग़ीबत और चुग़ली खाना ।
- गाना बजाना ।
- मादक पदार्थ का प्रयोग । जैसे शराब, कुकीन, हीरोईन आदि ।
- मुर्दार, खून तथा गन्दी वस्तुयें खाना ।

- सुवर,कुत्ता,फाड़ खाने वाले जानवरों तथा चिड़ियों का गोश्त खाना।
- अल्लाह के अतिरिक्त किसी अन्य के नाम पर ज़बह किये हुये जानवर का गोश्त खाना।
- बिना आवश्यक्ता कुत्ते पालना।
- सलीब या कोई और अइस्लामीय धार्मिक चिन्ह अपनाना।
- पुरूष का सोना रेशम पहनना तथा अपने कपड़ों को घुटनों से नीचे रखना, पुरूष इस विषय में महिलाओं के बिलकुल विपरीत है।
- यह बात स्पष्ट रहे कि खाने पीति तथा रीति रिवाज के विषय में इस्लाम का मूल विधान यह है कि यह वस्तुयें उस समय तक हलाल हैं जब तक इन की हुर्मत का स्पष्ट प्रमाण न मिल जाये, अतः इस्लाम ने हराम वस्तुओं की संख्या हमें बता दी है, अब इस्लाम जिस से मौन धार ले वह सब हलाल हैं।

इस्लाम का नैतिक सिद्धांत

- इस्लाम सद्व्यवहार तथा सदाचार को अति महत्व देता है अपितु इसे अज्र व सवाब में नमाज़ रोज़े के समान बताता है।
- एक मुसलमान के लिये जिन गुणों से सुसज्जित होना आवश्यक है वह निम्न हैं :
  1- सत्यता ﴾सच्चाई﴿
  2- अमानतदारी तथा वचननिर्वाह।
  3- पवित्रता एवं लज्जा।
  4- सहनशीलता एवं विनम्रता ﴾नर्मी﴿।
  5- क्षमायाचना एवं सुधार।
  6- विनय, दया तथा उपकार।
  7- कृपा तथा सुखद दाम्पत्य।
  8- न्याय।
  9- शक्ति, सम्मान तथा बहादुरी।
  10- धैर्य एवं सब्र।

इस्लामी शिष्टाचार

- मुसलमान सदा पवित्र रहता है, सुगन्ध तथा सुन्दरता को पसन्द करता है, मिस्वाक आदि सदा दांतों को साफ रखता है, अपने नाखुन तराशता है, खतना करवाता है, अपनी स्वास्थय की रक्षा करता है, नीचे और बग़ल के बाल साफ रखता है, सदा अपनी मूंछों को छोटी करवाता रहता है, कफिरों का रूप नहीं धारता,न ही सिर के कुछ भाग मुंडवाकर हास्यपाद रूप बनाता है।
- रास्ते की सफ़ाई,जीवन सुरक्षा,अन्य लोगों की देखरेख तथा सादगी, इस्लाम की महान शिष्टतायें हैं।
- मुसलमान अपने दायें हाथ से खाता पीता तथा लेन देन करता है, वज़ू, ग़ुस्ल, पहनने ओढ़ने यहाँ तक कि कंघी एवं बाल मुंडवाने का आरंभ भी दाहिनी ओर से करता है। मस्जिद तथा घर में प्रवेश करते समय, दाहिना पैर आगे बढ़ाता है, इन सारे कार्यों में अल्लाह के नबी ﷺ की पैरवी करता है।
- सोते समय वज़ू करके दाहिने पहलू पर सोइये।
- खान पान करते समय, सोते समय, कपड़ा उतारते समय, स्वारी पर स्वार होते समय, गिरते समय, संभोग करते समय, ज़बह करते समये, शौचालय जाते समय, घर में प्रवेश करते समय, घर से निकलते समय, मस्जिद में प्रवेश होते तथा निकलते समय बिस्मिल्लाह ﴿بسم الله﴾ पढ़िये।
- खाने पीने से फारिग़ होने के बाद अलहमदुलिल्लाह﴿الحمد لله﴾ कहिये
- स्वयं आप को छींक आने पर अलहमदुलिल्लाह ﴿الحمد لله﴾ कहिये किसी अन्य मुसलमान भाई के छींकने तथा ﴿الحمد لله﴾ कहने पर

उसे ﴿يرحمك﴾ यरहमुकल्लाह कह कर उत्तर दें, यदि आप ने छींकने पर अलहमदुलिल्लाह कहा है और किसी ने ﴿يرحمك الله﴾ कह कर दुआ दी है तो आप भी उसे ﴿يهديك الله﴾ कह कर दुआ दें

- जमाई आने पर मुंह पर हाथ रखना भी इस्लामी आदाब में से है
- जब आप स्वयं अल्लाह के नबी ﷺ का नाम लें या किसी को आप ﷺ का नाम लेता हुआ सुनें तो ﴿ﷺ﴾ सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कहें।
- कुर्आन पढ़ने से पूर्व शरीर को पवित्र कर लें फिर वज़ू करने के बाद अच्छी तरह से कुर्आन की तिलावत करें, यदि कोई अन्य कुर्आन की तिलावत कर रहा है तो उसे खामोशी से सुनें।
- नमाज़ के लिये शीघ्र जायें, नमाज़ के लिये बन संवर कर जायें, मस्जिद आते समय दुरगंध मारने वाली वस्तुओं से बचें, लहसुन तथा पियाज़ एवं सिग्रेट की बदबू लेकर मस्जिद में न आयें, मस्जिद में चंदे की बात न करें न ही कोई व्यापारिक बातचीत करें, जुमा के दिन अच्छी तरह श्नान करें, खुश्बू लगायें और मस्जिद जाकर खामोशी से खुतबा सुनें।
- दूसरों के घरों में जाने या किसी का सामान प्रयोग करने से पहले अनुमति लीजिये।
- जब किसी मुसलमान भाई से भेंट हो तो मुसाफहा कीजिये, उस का जवाब मुस्कुराहट से दीजिये बिना झुके ﴿السلام عليكم﴾ अस्सलामु अलैकुम कहिये, यदि कोई अन्य आप को सलाम करे तो ﴿وعليكم السلام﴾ वअलैकुमुस्सलाम कह कर उस का जवाब दीजिये, उस से बिदा लेते समय भी सलाम कीजिये।
- यात्री को बिदा करना, शादी विवाह या नवजात शिशु के जन्म जैसे शुभअवसरों पर एक दूसरे को शुभकामनायें देना इस्लामी आदाब में से है।

- बीमार की बीमार पुर्सी कीजिये और उसे यह दुआ दीजिये ﴿لا بأس طهور إن شاء الله﴾ लाबास तहूरुन इनशाअल्लाह ।
- यदि आप किसी कष्ट में पड़ जायें या आप के किसी निकट संबन्धी की मृत्यु होजाये तो यह दुआ पढ़िये ﴿إنا لله، وإنا إليه راجعون﴾ इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन ।
- मेहमान को सम्मान दीजिये, बड़ों की इज़्ज़त कीजिये, छोटों पर दया कीजिये, ग़रीब की सहायता कीजिये, पशुओं पर दया कीजिये ।
- जिस के हक़ में आप से ग़लती हुई है उस से क्षमा मांगिये, जिस ने आप की किसी प्रकार की सहायता की है उसे धन्यवाद देते हुये यह दुआ दीजिये ﴿جزاك الله خيراً﴾ जज़ाकल्लाहु खैरा ।
- अच्छी शैली में बात करना, लोगों की बातें धैर्य से सुनना, आवश्यक्ता पड़ने पर परामर्श देना भी इस्लामी आदाब में से है
- क्रोध से दूर रहिये, यदि किसी कारणवश क्रोध आ भी जाये तो ﴿أعوذ بالله من الشيطان الرجيم﴾ **अऊज़ुबिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम पढ़िये**
- केवल मुसलमान होने के कारण अपने नाम में परिवर्तन न कीजिये, हाँ यदि नाम ही गलत हो तो बदलने में कोई हरज नहीं जैसे किसी का नाम यसूदास, अथवा रामदास हो तो यह नाम ही गलत है अतः ऐसे नाम बदले जासकते हैं ।

दुआ प्रार्थना तथा ज़िक्र

- अल्लाह उन लोगों से मोहब्बत करता है जो उसे सदा याद करते रहते हैं, जो उस से क्षमा याचना की दुआयें करते रहते हैं। अतः आप भी अल्लाह को खूब याद कीजिये।
- **कुर्आन की अधिक तिलावत कीजिये, अपनी याद की हुई सूरतों को बार बार पढ़िये इस लिये कि कुर्आन अल्लाह का कलाम है।**
- नमाज़ से सलाम फेरने के बाद तीन बार ﴿استغفر الله﴾ अस्तग़्फ़िरुल्लाह पढ़िये फिर उस के बाद यह दुआ पढ़िये : ﴿اللهم أنت السلام ومنك السلام تباركت يا ذا الجلال والإكرام﴾ अल्लाहुम्म अन्तस्सलाम व मिनकस्सलाम तबारक्त या ज़लजलालि वलइकराम, यदि फर्ज़ नमाज़ हो तो ३३ बार सुबहानल्लाह, ३३ बार अलहम्दुलिल्लाह, ३३ बार अल्लाहु अक्बर पढ़िये फिर यह दुआ पढ़िये ﴿लाइलाह इल्लल्लाहु वहदहू ला शरीक लहू लहुलमुल्कु वलहुलहम्दु, वहुव अला कुल्लि शैइन क़दीर﴾
- प्रत्येक दिन १० बार ﴿लाइलाह इल्लल्लाहु वहदहू ला शरीक लहू लहुलमुल्कु वलहुलहम्दु, वहुव अला कुल्लि शैइन क़दीर﴾ पढ़ना बड़े सवाब का काम है।
- प्रत्येक दिन १०० बार ﴿सुबहानल्लाह व बेहम्देही﴾ पढ़िये।
- सर्वोत्तम दुआ वह है जिसे अल्लाह ने स्वयं कुर्आन की सूरये बक़रा आयत : २०१ में अपने बन्दों को सिखाया है : ﴿रब्बना आतिना फिद्दुनिया हसनतवं व फिल आख़िरति हसनतवं वक़िना अज़ाबन्नार﴾ सूरये आले इम्रान आयत : ८,१६ में अल्लाह ने यह दुआ भी बताई है : ﴿रब्बना ला तुज़िग़ क़ुलूबना बाद इज़ हदैतना, वहब लना मिल्लदुन्क रहमह, इन्नक अन्तल वह्हाब﴾,﴿ रब्बन इन्नना अमन्ना, फ़ग़्फ़िर लना ज़ुनूबना, वक़िना अज़ाबन्नार﴾ अधिकांश अल्लाह के रसूल ﷺ यह दुआ भी पढ़ा करते थे : ﴿या मुक़ल्लिबल क़ुलूब षब्बित क़लबी अला दीनिक﴾

स्त्री और इस्लाम

- इस्लाम में स्त्री का स्थान पुरूष के समान है, अपितु स्त्री पुरूष के शरीर ही का एक भाग मानी गई है, अतः न पुरूष स्त्री के बिना रह सकता है और न ही स्त्री पुरूष के बिना।
- इस्लाम ने पत्नी को सम्मान देने की महान शिक्ष दी है जो किसी अन्य धर्म में नहीं पाया जाता है, शादी में महर और खर्च की ज़िम्मेदारी पुरूष के सर डाली गई है, इस्लाम ने नेकी और सद्व्यवहार के विषय में माता को पिता की तुलना अधिक महत्व दिया है।
- स्त्री को इस्लाम में शिक्षा प्राप्त करने, कमाने, ज़मीन जायदाद का मालिक होने,पिता की छोड़ी हुई ज़मीन जायदाद में वारिष बनने, शादी का संदेश आने पर स्वीकार करने या नकार देने का पूर्ण अधिकार प्राप्त है।
- स्त्री पुरूष के समान अल्लह की पैदा की हुई एक सृष्टि है, उसे भी इस्लाम में प्रवेश करने का निमंत्रण दिया जायेगा, उसे भी अल्लाह की उपासना का अधिकार है, यह उस का कर्तव्य है कि वह अपनी संतान का प्रशिक्षण इस्लामी तरीक़े पर करे, उसे सद्व्यवहार तथा शिष्टाचार की शिक्षा दे, पति के आदेशों का पालन करे तथा उसे सम्मान दे, भलाई के काम करने तथा बुराई से दूर रहने में उस की सहायता करे, दूसरों को भी इस्लाम और भलाई की तरफ आने की दावत दे।
- इबादतों, हराम कामों तथा समस्त इस्लामी कार्यों में महिलाओं पर भी वही विधान लागू होगा जो मर्दों पर लागू होता है, सिवाये उन कामों के जिन्हें इस्लाम ने केवल मर्दों के साथ खास कर दिया है।

- इस्लाम स्त्री और पुरूष की जन्मजात विभिन्नताओं को महत्व देता है । इसी कारण स्त्री की माहवारी, गर्भ, और जन्म के अलग विधान बनाये हैं ।
- मुसलमान महिला माहवारी और प्रसूति के समय न तो नमाज़ पढ़ेगी और न ही रोज़ा रखेगी, उस से संभोग करना भी जायज़ नहीं, माहवारी और प्रसूति का खून बन्द होने के बाद औरत नहायेगी, फिर केवल छूटे रोज़ो की क़ज़ा करेगी, नमाज़ की क़ज़ा नहीं करेगी ।
- इस्लाम महिला के सतीत्व की सुरक्षा करता है उसे पतिव्रता बनने की शिक्षा देता है, उसे ज़िना तथा व्यभिचार जैसे घिनावने पाप से बचाता है, अतः उसे ऐसे कपड़े पहनने का आदेश देता है जो उस के संपूर्ण शरीर को ढांक ले ताकि वह स्वयं तथा अन्य लोग फितने और फसाद से दूर रहें । महिला के लिये अवैध है कि वह किसी अनजान आदमी साथ तनहाई में मिले । महिला के लिये पति, एवं जिन से सदा के लिये विवाह करना हराम है जैसे पिता, बेटा, भाई, चचा, और मामूँ के अतिरिक्त सारे लोग अनजान व्यक्ति हैं ।
- मुसलमान महिला के लिये किसी ग़ैर मुस्लिम से विवाह करना जायज़ नहीं ।

महत्वपूर्ण वसीय्यतें

- इस्लाम आप की प्राप्त की हुई सर्वमहान सम्पत्ति है, अतः आप इस विषय में किसी प्रकार की कोई कोताही न करें, आप अपने इस्लाम पर गर्व करें, आप को इस्लाम से फेरने की दूसरे जितना भी प्रयास करें आप उनकी परवा न करें बलकि अपने धर्म इस्लाम पर डटे रहें

- मुसलमानों की गलतियों को देख कर इस्लाम की सच्चाई और खूबी का फैसला न कीजिये, इस लिये कि कभी मुसलमान इस्लामी शिक्षा का विरोध भी कर सकता है और कुर्आनी शिक्षा के विपरीत काम भी कर सकता है
- मुसलमानों से प्रेम और उन की सहायता करना आप के इस्लाम शक्ति का प्रमाण है, अल्लाह का फ़र्मान है : ﴿إنما المؤمنون إخوة﴾ सारे मुसलमान परस्पर भाई भाई हैं। (सूरये हुजुरात : १०)
- अल्लाह की अनुमति से इस्लाम पर जमे रहने के लिये आप को निम्न आदेशों का पालन करना होगा :
- आप अधिक से अधिक इस्लामी शिक्षा प्राप्त करें, कुर्आन को समझें, तथा किसी भी धार्मिक समस्या का समाधान ढूंढने के लिये प्रश्न करने से भी न हिचकिचायें।
- अल्लाह के नबी ﷺ तथा आप के सहाबियों की जीवनियाँ पढ़िये, मुसलमान इमामों की सीरत भी आप को लाभ पहुंचायेगी।
- पांच समय नमाज़ों की सुरक्षा कीजिये, उन्हें समय से अदा कीजिये,मर्द मस्जिद में आकर नमाज़ अदा करें, जुमा के खुतबे और नमाज़ में उपस्थित हूं।
- अच्छ और नेक मुसलमानों की संगत अपनाइये।
- अरबी भाषा जो कुर्आन और रसूल ﷺ की भाषा है उसे सीखने का प्रयास कीजिये ताकि इस्लाम की शिक्षाओं को भलीभांति समझ सकें।
- निम्नलिखित तरीक़े से दूसरों को इस्लाम के निकट लाइये :
    - स्वयं इस्लाम की समस्त शिक्षाओं पर अमल कीजिये, इस्लाम से अपनी हार्दिक लगाव का प्रदर्शन कीजिये, इस्लामी आदेशों का पालन करने में शीघ्रता कीजिये।

- अन्य लोगों से अपना व्यवहार बेहतर बनाइये, अपना काम बेहतर अन्दाज़ में अंजाम दीजिये, ताकि दूसरे आप के जीवन में इस्लामी शिक्षाओं का प्रभाव देख सकें।

- यदि आप के माध्यम से आप के हाथों पर कोई मुसलमान होता है तो आप को भी उतना ही अज्र मिलेगा जितना उस नये मुसलमान को मिलेगा। अतः अच्छे अन्दाज़ में पहले अपने घर वालों तथा मित्रों से इस्लामी दावत आरंभ कीजिये, उन्हें धार्मिक पुस्तक उचित कैसेट्स आदि भेंट कीजये ताकि बात समझने में आसानी हो, आप अल्लाह से अपने लिये तौफीक़ और अन्य लोगों के लिये इस्लाम लाने की दुआ कीजिये।
- बिना ज्ञान किसी समस्या में इस्लामी फैसला सुनाने से बचिये, इस्लाम के विषय में केवल उसी व्यक्ति से प्रश्न कीजिये जिस के ज्ञान और अमानत पर आप को विश्वास है।
- धार्मिक मेलों में गैर मुस्लिमों का साथ न दीजिये, इस लिये कि आप मुसलमान हैं, केवल आप ही सत्य पर हैं, मुसलमान हर वर्ष केवल दो ही ईद मनाता है एक ईदुल फित्र, दूसरे बक़रईद
- हर नेक काम में आप का उद्देश्य अल्लाह की प्रसन्नता तथा उस से सवाब की आशा हो।
- अपनी समस्त आवश्यक्ताओं में अल्लाह ही से सहायता मांगिये, आप अपने बुद्धि में यह बात सदा रखिये कि आप अल्लाह के मुहताज हैं, अल्लाह की हर नेमत पर उस का शुक्र अदा कीजये।
- आप सदैव यह बात याद रखिये कि अल्लाह आप को देख रहा है, उसे आप के हर काम का ज्ञान है, वह आप पर क़ादिर है, उसे कोई वस्तु आजिज़ नही कर सकती
- आप से जब भी कोई गलती हो फौरन अल्लाह से तौबा कीजिये, उस से क्षमा मांगिये, आप यह न कहिये कि मेरे

गुनाह अधिक हैं इस लिये तौबा करने का क्या लाभ, इस लिये कि अल्लाह की दया और क्षमायाचना की शक्ति बड़ी विशाल है

- यदि आप को सफलता की खोज है तो धैर्य रखिये, इस लिये नर्क का मार्ग तो बड़ा सरल है, हर कोई उस में जासकता है, किन्तु स्वर्ग एक दुर्लभ सम्पत्ति है अतः आवश्यक है कि आप धैर्य से काम लें, अपनी आत्म कामनाओं को लगाम दें यहाँ आप को स्वर्ग मिल जाये। यदि कोई आप को कष्ट देना चाहे या आप के धर्म का मज़ाक़ उड़ाये तो आप को जानना चाहिये कि ऐसा तो नबियों और सदाचारियों के साथ भी हुआ है, उन सारे लोगों ने अल्लाह के लिये सब्र किया है, उन के निकट अल्लाह के प्रकोप तथा दण्ड की तुलना लोगों की ओर से पहुंचा कष्ट कोई अर्थ नहीं रखता।

अपने ज्ञान को परखिये

- इस्लाम की चार विशेष्ताये लिखिये ?
- अल्लाह के नबी ﷺ की कोई ऐसी हदीस लिखिये जिस से ज्ञान प्राप्त करने की अहमियत का पता चलता हो ?
- लाइलाह इल्लल्लाह का अर्थ लिखिये ?
- दिन रात की पाँच नमाज़ों में किन नमाज़ों की संख्या चार रकअत होती है ?
- किस नमाज़ से रात आरंभ होती है और किस से दिन, स्पष्ट कीजिये और उन की रकअतों की संख्या भी बताइये ?
- जुमा की नमाज़ कितनी रकअत है ? कहाँ पढ़ी जाती है ? क्या औरतों के लिये भी अनिवार्य है ।
- पाँचों नमाज़ों से पहले या बाद में जो सुन्नतें पढ़ी जाती हैं, उन की संख्या विस्तारपूर्वक लिखिये ?
- वज़ू के चार अंग है एक को छोड़ कर सब को धुलना आवश्यक है एक पर मसह किया जाता है वह अंग कौन सा है
- उन चार वस्तुओं का ज़िक्र कीजिये जिन से मुसलमान मर्द औरत पर श्नान वाजिब होजाता है ।
- नमाज़ के लिये पवित्रता प्राप्त करने में मिट्टी का प्रयोग कब जायज़ है उस का नियम क्या है ?
- वज़ू को भंग करने वाली पाँच वस्तुओं का ज़िक्र कीजिये ?
- नमाज़ से पूर्व जिन वस्तुओं का पाया जाना आवश्यक है उन में से किन्हीं तीन का ज़िक्र कीजिये ?
- वह कौन सी मस्जिद है जिस की दिशा में मुसलमान नमाज़ पढ़ता है, उस का निर्माण किस ने किया है ?
- नमाज़ में प्रवेश करने के लिये आप क्या कहेंगे ? नमाज़ से बाहर आने के लिये आप क्या कहते हैं ?

- पूरी नमाज़ में एक काम से दूसरे काम में परिवर्तित होने के लिये आप अल्लाहु अकबर कहते हैं, केवल एक स्थान है जहाँ आप अल्लाहु अकबर न कहर दूसरा शब्द कहते हैं वह स्थान क्या है और वहाँ आप क्या कहते हैं ?
- नमाज़ में तीन ऐसे स्थानों का ज़िक्र कीजिये जहाँ आप अपने हाथ कंधों या कान की लौ तक उठाते हैं ?
- रुकू और सदजे की तसबीह में क्या अन्तर है ?
- वह कौन से सात अंग हैं जिन पर आप सजदह करते हैं ?
- नमाज़ में बैठने का दो तरीक़ा है, उन्हें ब्यान कीजिये ?
- पाँचों नमाज़ों में से केवल एक नमाज़ ऐसी है जिस में केवल एक तशह्हुद है वह नमाज़ कौन सी है ?
- यदि आप को सूरये फातिहा न याद हो तो आप अपनी नमाज़ में क्या करेंगे ?
- नमाज़ को नष्ट करने वाली तीन वस्तुयें लिखिये ?
- इस्लाम के पाँच मूल आधार क्या हैं ?
- वह कौन सा महीना है जिस में हर मुसलमान मर्द औरत पर दिन में खाना पीना तथा संभोग करना हराम है ?
- फरिश्ते कौन हैं ?
- अल्लाह की उतारी हुई तीन आस्मानी किताबों का ज़िक्र कीजिये, तथा यह भी बताइये कि यह किताबें किन नबियों पर उतारी गईं ?
- चार ऐसे काम बताइये जो अल्लाह की ऐकेश्वरवाद के विरुद्ध हैं
- आप का उस व्यक्ति के विषय में क्या विचार है जो किसी क़बर के पास आकर क़बर वाले से अल्लाह के पास अपने पापों के क्षमा की सिफारिश का अनरोध करे |
- दीन में प्रवेश किये गये दो नवीन कामों ﴿बिदअतों﴾ का ज़िक्र कीजिये ?
- नमाज़ को समय से विलंब करके पढ़ने का हुक्म क्या है ?

- सूद व्याज क्या है ?
- हराम रास्ते से धन प्राप्त करने के तीन तरीक़े व्यान कीजये ?
- पाँच ऐसी वस्तुओं का ज़िक्र कीजिये जिन का खाना हराम है ?
- पूरूष और महिला के पहनावे में दो अन्तर लिखिये ?
- इस्लाम शरीर के किस भाग का बाल निकालने और किस के काटने का आदेश देता है ?
- सोते समय मुसलमान को क्या करना चाहिये ?
- पाँच ऐसी स्थितियों का ज़िक्र कीजिये जहाँ आप ﴿بسم الله﴾ पढ़ते हैं
- जमाई और छींक आने पर आप क्या करेंगे ?
- बीमार का दर्शन करते समय आप उसे क्या दुआ देंगे ?
- आप अपने सहायक को क्या दुआ देंगे ?
- नमाज़ से सलाम फेरने के बाद आप कौन सी दुआ पढ़ेंगे ?
- इस्लाम ने महिला को किस सीमा तक सम्मान दिया है, स्पष्ट कीजिये ?
- यदि महिला को रमज़ान में माहवारी का खून आजाये तो वह छूटे नमाज़ रोज़ों की क़ज़ा करेगी ?
- चार ऐसे काम लिखिये जो एक नये मुसलमान के लिये इस्लाम पर जमे रहने में सहायक हूँ ?
- किसी के हाथ पर किसी के इस्लाम लाने का क्या षवाब है ?
- वह कौन सी दो ईदें हैं जिन में मुसलमान हर वर्ष खुशियाँ मनाता है ? तथा इन दो दिनों में इस्लाम के किन दो मूल आधारों की अदायगी की जाती है ?

سور من القرآن الكريم

कुछ महत्वपूर्ण कुर्आनी सूरतें

उच्चारण संबन्धी कुछ बातें

आने वाली कुआनी सूरतों में आप को कुछ अक्षर लाल दिखेंगे, यह लाल अक्षर अर्बी भाषा के कुछ विशेष उच्चारण दर्शाते हैं जो अन्य भाषाओं में नहीं मिलते अतः सरलता के लिये निम्न में वही अक्षर दिये जारहे हैं।

अरबी उच्चारण	समान हिन्दी अक्षर
ث	ष
ح	ह़
خ	ख़
ذ	ज़
ز	ज़
ص	स़
ض	ज़
ط	त़
ظ	ज़
ع	अ़

غ	ग़
ق	क़

फिर भी यदि आप को इन अक्षरों के उच्चारण में कष्ट हो तो आप किसी जन्मजात अरबी से सही उच्चारण जानने के लिये सहायता लें।

सूरतुल-फातिहा

(१) [बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम] आरंभ करता हूँ उस अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त दयालु तथा महा कृपावान है, सम्मानतः मैं अल्लाह के नाम से आरंभ करता हूँ,उस से कुर्आन की तिलावत में सहायता मांगते हुये एवं उस से स्वीकार करने की प्रार्थना करते हुये।

(२) [अल्हम्दुलिल्लाहि रब्बिल आलमीन] समस्त प्रकार की प्रशंसा उस अल्लाह के लिये है जो सर्वलोक का रब एवं पालनहार है। अर्थात समस्त प्रकार का गुणगान तथा प्रशंसा मात्र अल्लाह के लिये है जिस पूर विश्व का रचयिता है, वही उस देख रेख कर रहा है, समस्त स्रष्टि उसी की सुखसामग्रियों के अधीन है, वही सदाचारियों को नेकी और भलाई के कामों की ओर मार्गदर्शित करता है।

(३) [अर्रहमानिर्रहीम] बड़ा दयावान तथा अति करुणामई है। जिस की कृपा समस्त स्रष्टि को अपने घेरे में लिये हुये है, विशेष कर मोमिनों पर तो वह बड़ा ही दयावान है।

(४) [मालिकि यौमिद्दीन] बदले के दिन अर्थात क़यामत का स्वामी है, जिस दिन प्रतयेक को अपने किये का बदला मिलने वाला है।

(५) [इय्याक नअ्बुदु व इय्याक नस्तईन] हे अल्लाह ! हम विशेष रूप से केवल तेरी ही उपासना करते हैं और समस्त कार्यों में केवल तुझी से सहायता मांगते हैं।

(६) [इहदिनस्सिरातल् मुस्तक़ीम] हमें इस्लाम का सत्य और सीधा मार्ग दिखा (तथा उस पर जमे रहने की शक्ति प्रदान कर)

(७-८) [सिरातल्लज़ीन अन्अमत अलैहिम्, ग़ैरिल् मग़्ज़ूबि अलैहिम् वलज़्ज़ाल्लीन] उन लोगों का मार्ग जिन पर तेरा इनआम व इकराम तथा उपकार हुआ, उन का मार्ग नहीं जिन पर तेरा प्रकोप आया (जैसे कि यहूदी) न ही उन का जो गुमराह तथा पथभ्रष्ट हुये (जैसे कि ईसाई) यहाँ हमें अल्लाह की ओर से यह दुआ सिखाई गई है कि हम अल्लाह से नबियों और सदाचारियों की चलने की प्रार्थना करें तथा उन लोगों के

मार्ग से बचें जिन्हें अल्लाह के कोध के अतिरिक्त और कुछ हाथ न आया, इसी प्रकार उन लोगों की राहों से भी दूर रहें जिन्हों अल्लाह के बताये हुये मार्ग को छोड़ कर सत्य की खोज करनी चाही तो पथभ्रष्टता उन का भाग्य बनी।

- **सूरये फातिहा पवित्र कुर्आन की प्रथम सूरत है, इसी सूरत से कुर्आन आरंभ होता है, यह कुर्आन की अति महत्वपूर्ण तथा महान सूरत है। इस में मुसलमानों को यह शिक्षा दी गई है कि वह अल्लाह को किस तरह याद करें, उस की महानता तथा उस की विशाल राज्य का ब्यान करके उस की प्रशंसा करें, उस के शुभ नामों को माध्यम बना कर उस से अपनी बिगड़ी बनाने के प्रश्न करें। अल्लाह ने इस सूरत के माध्यम से मुसलमानों को यह भी शिक्षा दी है कि आखिरत को याद करें ताकि नेक कार्य करके वहाँ जाने की तैय्यारी कर सकें, उपासना तथा अराधना केवल अल्लाह के लिये हो उस में दिखावे का मिश्रण भी न हो। अल्लाह ही से सहायता मांगी जाये तथा केवल उसी पर भरोसा किया जाये, अल्लाह के अतिरिक्त किसी और से हार्दिक संबन्ध न स्थापित न किया जाये चाहे कोई कितना बड़ा ही क्यों न हो। मनुष्य अल्लाह को अति सम्मान से पुकारे, उस से इस्लाम और प्रत्येक सत्यकार्य की ओर मार्गदर्शन की प्रार्थना करे। इस्लाम की सम्पत्ति को गर्व का कारण और अल्लाह की उपासना की शक्ति और तौफीक़ को वास्तविक प्रसन्नता का सबब जाने, इसलिये कि इस्लाम ही सर्वमहान सम्पत्ति है। अन्य लोगों की हिदायत और उनके इस्लाम में प्रवेश करने का अभिलाषी हो उन्हें इस्लाम की ओर बुलाने का शुभकार्य भी करे, समस्त मुसलमानों को अपना भाई समझे एवं वास्तविक मुसलमानों से प्रेम करे, उसे यहूदियों और नसरानियों के काफिर होने का भी विश्वास हो, किसी भी धार्मिक समस्या में उन का अनुसरण न करे। इस्लामी शिक्षा प्राप्त करने तथा उस के अनुसार जीवन व्यतीत करने का अभिलाषी हो ताकि ज्ञान रखते हुये अल्लाह की उपासना कर सके, यहीदियों के समान उस के कार्य उस के ज्ञान के विपरीत न हूँ, न ही अल्लाह के बनाये हुये विधान को छोड़ कर नसरानियों के समान मनमानी उपासना करे**

सुरह अल - अस्र

(१-२) [वल्अस्र इन्नल्इन्सान लफीखुस्र] क़सम है समय और ज़माने की, निःसंदेह समस्त मानवजाति सर्वथा घाटे में हैं।

(३) [इल्लल्लज़ीन आमनू व अमिलुस्सालिहाति व तवासौव बिल्हक्कि, वतवासौव बिस्सब्रे] उन के अतिरिक्त जो ईमान लाये तथा सत्कार्य किये एवं परस्पर सत्य की वसीय्यत की तथा एक दूसरे को धर्य रखने का उपदेश दिया। लोगों इस्लाम, सत्कार्य तथा न्याय पर जमे रहने का आदेश दिया तथा इस्लाम और अल्लाह की उपासना की राह में पेश आने वाली मुसीबतों पर धैर्य रखने का उपदेश दिया इस लिये कि सभी अल्लाह के बनाये हुये अच्छे बुरे भाग्य के अधीन हैं।

सुरह अल-हुमज़ा

(१) [वैलुल्लिकुल्लि हुमज़तिल्लुमज़ह] बड़ी ख़राबी है उस व्यक्ति की जो त्रुटियाँ टटोलने वाला चुग़ली खाने वाला है। अर्थात जो लोगों की पीठपीछे उस के उयूब ब्यान करता फिरता है, नानाप्रकार की हरकतें करके उन का उपहास उड़ाता है।

(२) [अल्लज़ी जमअ मालौव्वंअद्दद्दह] जिस ने माल एकत्रित किया और उसे गिगिन कर रख्खा।

(३) [यहसबु अन्न मालहू अख्लदह] उस ने यह समझ रख्खा है कि उस का एकत्रित किया हुआ माल उसे संसार में सदैव बाक़ी रख्खेगा, इस प्रकार वह हिसाब किताब से बच जायेगा।

(४) [कल्ला लयुँमबज़न्न फ़िल्हुतमह] कदापि नहीं इसे तो अवश्य तोड़ फोड़ देने वाली अग्नि में फेंक दिया जायेगा।

(५) [वमा अद्राक मल्हुतमह] तथा तुझे क्या पता कि ऐसी अग्नि क्या कुछ होगी ?

(६-७) [नारुल्लाहिल् मूक़दह, अल्लती तत्तलिउ अलल अफ्इदह] वह अल्लाह की सुलगाई हुई आग होगी जो दिलों पर चढ़ती चली जायेगी।

(८-९) [इन्नहा अलैहिम मूअ्सदह, फी अमदिम्मुमद्दद्दह] वह आग उन पर हर ओर से बड़े बड़े स्तम्भों में बांध कर बन्द की हुई होगी।

सुरह अल-फील

(१) [अलम तर कैफ फअल रब्बुक बिअस्हाबिल फ़ील] क्या तूने नहीं देखा कि तेरे रब ने हाथी वालों के साथ क्या किया। ﴾अर्थात काबा को ढाने के लिये आये हुआ अबरहा हबशी तथा उस की सेना, यह घटना अल्लाह के नबी ﷺ के जन्म के पचास या पचपन दिन पहले घटी﴿

(२) [अलम यज्अल् कैदहुम् फी तज़्लील] क्या उस ने उनकी दुष्प्रयोजन को अकारथ नहीं कर दिया।

(३-४) [व अरसल अलैहिम् तैरन अबाबील, तर्मीहिम बिहिजारतिम् मिन सिज्जील] तथा उन पर पक्षियों के झुरमुट भेज दिये, जो उन्हें मिट्टी तथा पत्थर से बनी कंकरियाँ मार रहे थे

(५) [फ जअलहुम् क अस्फिम्माकूल] फिर उन्हें जानवरों के खाये हुये भूसे के समान बना दिया।

सुरः कुरैश

(१-२) [लिईलाफ़िकुरैश्, ईलाफ़िहिम् रिह्लतश्शिताइ वस्सैफ़्] कुरैश को मानूस करने के लिये, अर्थात उन्हें जाड़े तथा गर्मी की यात्रा का अनुसेवी बनाने के लिये।

(३) [फल यअ्बुदू रब्ब हाज़ल्बैत्] अतः ﴾धन्यवाद में﴿ उन्हें चाहिये कि इसी घर के रब की उपासना करेते रहें।

(४) [अल्लज़ी अत्अमहुम् मिन जूइंअ्, व आमनहुम् मिन् ख़ौफ] जिस ने उन्हें भूख में भोजन दिया तथा डर एवं भय में उन्हें शान्ति प्रदान किया। ﴾इस लिये कि मक्का बिना घास फूस की एक घाटी थी, अल्लाह ने वहाँ पर भी अपनी शक्ति से लोगों को जीविका प्रदान की एवं शान्ति के साथ व्यापार करने का अवसर दिया, जब कि उन्हीं के आस पास के लोग नाना प्रकार की मुसीबतों से जूझते रहते थे, इसी प्रकार अल्लाह ने उन्हें हाथी वालों से सुरक्षित रखा।

सूरह अल-माऊन

(१) [अरअैतल्लज़ी युकज़्ज़िबुबिद्दीन्] क्या तूने उसे भी देखा जो बदले के दिन को झुटलाता है

(२) [फ़ज़ालिकल्लज़ी यदुअ्उल यतीम्] यही वह है जो अनाथ को धक्के देता है। उसे उस के वैध अधिकार से भी वंचित रखता है।

(३) [वला यहुज्ज़ु अला तआमिल् मिस्कीन्] तथा निर्धन (भूके) को भोजन कराने पर उभारता भी नहीं। तो स्वयं वह किसी को कैसे खिला सकता है, जब कि वह आखिरत पर विश्वास भी नहीं रखता।

(४-५) [फ़वैलुल्लिल् मुसल्लीन्, अल्लज़ीन हुम अन् सलातिहिम् साहून] उन नमाज़ियों के लिये वैल (नरक में एक स्थान) जो अपनी नमाज़ से अचेत हैं। जो अपने नमाज़ों की सुरक्षा नहीं करते, न ही समय से उन्हें अदा करते हैं, उन्हें नमाज़ों की कोई परवा ही नहीं, कारण यह है कि उन्हें अपने पुनर्जन्म तथा बदले के दिन पर विश्वास ही नहीं।

(६) [अल्लज़ीन हुम् युराऊन्] जो दिखावे का कार्य करते हैं, ताकि लोग उन्हें नेक समझ कर उन की प्रशंसा करें।

(७) [व यम्नऊनल् माउन्] तथा प्रयोग में आने वाली छोटी छोटी वस्तुओं को भी रोक कर रखते हैं। (बर्तन आदि भी किसी को उधार देना गवारा नहीं करते)

सूरह अल-कौषर

(१) [इन्ना आतैनाकल्कौषर्] निःसंदेह हम ने तुझे नहरे कौषर (जैसी महान नेमत) प्रदान की है (अल्लाह के नबी ﷺ का फ़र्मान है कि : यह स्वर्ग की एक नहर है जिसे मेरे रब ने मुझे प्रदान किया है, उस में बड़ी खूबियाँ हैं, क्यामत के दिन मेरी उम्मत के लोग वहाँ आयेंगे, उस के बर्तनों की संख्या सितारों की संख्या के समान है) (मुस्लिम)

(२) [फ़सल्लि लिरब्बिक वन्हर] अतः तू अपने रब के लिये नमाज़ पढ़ तथा कुर्बानी कर।

(३) [इन्न शानिअक हुवल् अब्तर्] निःसंदेह तेरा शत्रु ही निरवंश एवं बेनाम व निशान है। (इस लिये कि हर प्रकार की भलाई आप ﷺ से प्रेम रखने तथा आप का अनुसरण करने में छुपी हुई है)

सूरह अल-काफ़िरून

(१) [कुल् याअय्युहल् काफ़िरून] आप कह दीजिये कि हे काफ़िरो ! (हे अल्लाह की नेमतों तथा अल्लाह और उस के रसूल को झुटलाने वालो)

(२) [ला अअ्बुदु मा तअ्बुदून] तुम जिन (बुतों और पत्थरों) की पूजा करते हो न मैं उन की पूजा कर सकता हूँ। (बल्कि मैं उन से अलग हूँ)

(३) [व ला अन्तुम् आबिदून मा अअ्बुद] न ही तुम मेरी तरह केवल अल्लाह की पूजा करते हो। (अर्थात तुम सत्य मार्ग पर नहीं हो)

(४) [व ला अन आबिदुम माअबत्तुम्] एक बार फिर मैं पुनः वही बात दोहरा रहा हूँ कि तुम्हारे झूटे माबूदों की पूजा नहीं करता।

(५) [व ला अन्तुम् आबिदून मा अअ्बुद] न तुम उस की इबादत करोगे जिस इबादर मैं कर रहा हूँ।

(६) [लकुम् दीनुकुम् व लियदीन] तुम्हारा लिये तुम्हारा दीन है (मैं उसे नहीं मान सकता) एवं मेरे लिये मेरा दीन है, (मैं अपने इस धर्म से सहमत हूं मुझे कोई और धर्म नहीं चाहिये तथा जिसे तुम स्वीकार करने के लिये तैय्यार नहीं हो)

सूरह अल्-नस्र

(१) [इज़ा जाअ नस्रुल्लाहि वल्फ़त्ह] जब अल्लाह की सहायता एवं विजय प्राप्त हो जाये।

(२) [व रअैतन्नास यद्खुलून फ़ी दीनिल्लाहि अफ़्वाजा] तथा तू लोगों को अल्लाह के धर्म की ओर झुंड के झुंड आता देख ले।

(३) [फ़सब्बिह् बिहम्दि रब्बिक वस्तग़्फ़िर्हु इन्नहू कान तौव्वाबा] तो तू अपने रब की महिमा एवं प्रशंसा करने में लग जा, तथा उस से क्षमा की प्रार्थना कर, निःसंदेह वह क्षमा करने वाला है। (अल्लाह तौबा करने वालों के तौबे स्वीकार करता तथा उन पर दया खाता है)

सूरह अल-मसद

(१) [तब्बत यदा अबी लहबिव्वंतब्ब्] अबू लहब के दोनों हाथ टूट गये तथा वह स्वयं नाश होगया। (अबू लहब अल्लाह के नबी ﷺ का चचा था, यह आप ﷺ को कष्ट पहुंचाया करता तथा लोगों को आप ﷺ की दावत से फेरता रहता था।

(२) [मा अग़्ना अन्हु मालुहू वमा कसब्] न तो उस का माल उस के काम आया न ही उस की कमाई। (यह सारी वस्तुयें उसे अल्लाह के प्रकोप से नहीं बचा सकती हैं)

(३-४) [सयस्ला नारन् ज़ात लहब्, वम्रअतुहू हम्मालतल् हतब्] वह निकट ही भविष्य में धधकती एवं भड़कने वाली आग में जायेगा। एवं उस की वह पत्नी भी जो लकड़ियों का भार ढोने वाली है। (अबू लहब की पत्नी का नाम उम्मे जमील था, यह भी अल्लाह के नबी ﷺ को कष्ट पहुंचाने से नहीं चूकती थी बल्कि आप के मार्ग में कांटे बिछा दिया करती थी।

(५) [फ़ी जीदिहा हब्लुम्मिम्मसद्] उसकी गर्दन में खजूर की छाल की बटी रस्सी होगी (जिस की सहायता उसे नर्क में फेंक कर अज़ाब दिया जायेगा)

सूरह अल-इख़्लास

(१) [कुल हुवल्लाहु अहद्] (आप) कह दीजिये कि वह अल्लाह एक ही है। (उस का कोई साझी नहीं)

(२) [अल्लाहुस्समद्] अल्लाह किसी के अधीन नहीं, सभी उस के अधीन हैं। (वही आवश्यक्तायें पूरी करता है)

(३) [लम यलिद् व लम् यूलद्] न उस से कोई पैदा हुआ तथा न उसे किसी ने पैदा किया। (अर्थात न उस की पत्नी तथा संतान हैं न ही माता पिता)

(४) [व लम् यकुल्लहू कुफ़ुवन् अहद्] तथा न ही कोई उस का समकक्ष है। अर्थात उसके अस्तित्वि तथा विशेष्ताओं में कोई उस के समान नहीं।

सूरह अल-फ़लक़

(१) [क़ुल अऊज़ु बिरब्बिल फ़लक़्] आप कह दीजिये कि मैं प्रातः के रब की शरण में आता हूँ।

(२) [मिन शर्रि माख़लक़्] प्रत्येक उस वस्तु की बुराई से जो उसने पैदा की है

(३) [वमिन् शर्रि ग़ासिक़िन् इज़ा वक़ब्] तथा अंधेरी रात्रि की बुराई से जब उस का अंधकार फैल जाये।

(४) [वमिन् शर्रिन्नफ़्फ़ासाति फ़िल्उक़्द्] तथा गांठ (लगा कर उन) में फूंकने वालियों की बुराई से भी।

(५) [वमिन् शर्रि हासिदिन् इज़ाहसद्] तथा हसद करने वाले की बुराई से भी जब वह हसद करे।

सूरह अन्-नास

(१) [क़ुल अऊज़ु बि रब्बिन्नास्] आप कह दीजिये कि मैं लोगों के रब की शरण में आता हूँ

(२) [मलिकिन्नास्] लोगों के मालिक की।

(३) [इलाहिन्नास्] लोगों के वास्तविक उपास्य की (शरण में)

(४) [मिन् शर्रिल् वस्वासिल् ख़न्नास्] शंका डालने वाले पीछे हट जाने वाले की बुराई से। अर्थात उस शैतान की दुष्टता से जो छुप कर बुराई का निमंत्रण देता है एवं जब अल्लाह का नाम लिया जाता है तो वह छुप जाता है।

(५) [अल्लज़ी युवस्विसु फ़ी सुदूरिन्नास्] जो लोगों के सीनों में शंका डालता है।

(६) [मिनल् जिन्नति वन्नास्] (चाहे) वह जिन्न में से हो अथवा मनुष्य में से।

﴿समस्त प्रकार की प्रशंसा उस अल्लाह के लिये है जिस ने हमें इस सत्य मार्ग पर डाला﴾

अल्लाह से हमारी यही प्रार्थना तथा विनती है कि वह इस कार्य को हर पढ़ने एवं सुनने वाले के लिये लाभदायक बनाये तथा अनुवादक,शंसोधक,एवं प्रकाशक को इस का अच्छा बदला दे । ﴿आमीन﴾

संग्रह :
अनुसन्धान तथा अनुवाद विभाग
जुबैल दावा सेन्टर ।

अनुवाद :
महफूजुर्रहमान समीउल्लाह
जुबैल दावा कार्यालय
﴿1424 H.= 2004 G﴾

कृप्या : इस लाभदायक पुस्तक को स्वयं पढ़ने के बाद किसी मित्र को भेंट करें अथवा किसी ऐसे सार्वजनिक स्थान पर रखने का कष्ट करें जहाँ से अन्य लोग लाभ उठा सकें |

- अनूदित कुर्आन मजीद : अनु : अज़ीज़ुलहक़ उमरी व मो. ताहिर सलफ़ी ।
- तक़्वीय्यतुल ईमान : लेखक : शाह इस्माईल शहीद रहिमहुल्लाह ।
- नमाज़ : लेखक : मौलाना मुख़तार अहमद नदवी
- इस्लाम के सिद्धान्त : लेखक : हमूद बिन मोहम्मद ।
- इस्लाम धर्म : सय्यद अबुल आला मूदूदी ।
- मार्ग दर्शन : संकलन : अज़ीज़ुल हक़ उमरी
- इसलाम और अहिंसा : शैख़ सफ़ीउर्रहमान मुबारकपूरी ।
- सच्चा धर्म : लेखक : अबू अमीना बिलाल फिलिप्स ।
- लाइलाहा इल्लल्लाह का अर्थ : हमूद बिन मोहम्मद ।
- मोहम्मद ﷺ हिन्दू किताबों में, लेखक : इब्ने अक्बर आज़मी ।
- कुर्आन और पैग़म्बर : सय्यद अबुल आला मौदूदी ।
- इस्लाम की जीवन व्यवस्था : सय्यद अबुल आला मौदूदी ।
- मोहम्मद इस्लाम के पैग़म्बर : प्रो . के . एस
- कुर्आन की शीतल छाया : डाक्टर ज़ियाउर्रहमान आज़मी ।
- प्रार्थना (दुआ) के नियम : अनुवाद महफ़ूज़ुर्रहमान ।
- जनाज़ह के नियम : अनुवाद : महफ़ूज़ुर्रहमान ।
- इस्लामी सिद्धान्त पर बच्चों का पोषण : अनु : रज़ाउर्रहमान अन्सारी ।
- इस्लाम और ईमान के स्तम्भ : अनु : रज़ाउर्रहमान अन्सारी ।
- सत्य धर्म की खोज, सत्य धर्म एक या अनेक : अज़ीज़ुल हक़ उमरी ।
- इस्लाम और औरत : डा : मुक़्तदा हसन अज़हरी
- सत्य धर्म : अनु : रज़ाउर्रहमान अन्सारी
- अहले सुन्नत वलजमाअत का अक़ीदा : अनु : रज़ाउर्रहमान अन्सारी ।
- सलातुर्रसूल : लेखक : मौलाना सादिक़ सियालकोटी ।
- इस्लाम जिस से मुझे प्यार है : अब्दुल्लाह अडियार ।
- सही इस्लामी आस्था(अक़ीदा) अनुवादः महफ़ूज़ुर्रहमान समीउल्लाह ।
- दावत के सार्वजनिक साधन । अनुवादः महफ़ूज़ुर्रहमान समीउल्लाह ।
- नबी ﷺ की नमाज़ । अनुवादः महफ़ूज़ुर्रहमान समीउल्लाह ।
- उमरह के नियम । लेख : महफ़ूज़ुर्रहमान समीउल्लाह ।
- इस्लामी एक्ता । अनुवाद : महफ़ूज़ुर्रहमान समीउल्लाह ।
- इस्लामी एक्ता । अनुवाद : महफ़ूज़ुर्रहमान समीउल्लाह ।

इस्लाम धर्म के प्रमुख वेब साइट्स

www.islam-qa.com
www.islamweb.net
www.islamunveiled.com
www.islam-guide.com
www.al-islam.com
www.discoverislam.com
www.viewislam.com
www.it-is-truth.org
www.thetruereligion.com
www.bilalphilips.com
www.fatwa-online.com
www.alharmain.org
www.ibnbaz.com
www.ibnothaimeen.com
www.islamtoday.com
www.alejaz.com